9 सुभद्राकुमारी चौहान

सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म संवत् 1961 (सन् 1904 ई0) में इलाहाबाद जिले में स्थित निहालपुर मोहल्ले के एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। इनके पिता रामनाथ सिंह सुशिक्षित और प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। बहुत छोटी अवस्था से ही इन्हें हिन्दी काव्य से विशेष प्रेम था, जो बाद में जाकर पल्लवित हुआ। इनका विवाह खण्डवा (मध्य प्रदेश) निवासी ठाकुर लक्ष्मणसिंह चौहान के साथ हुआ। विवाह के साथ ही सुभद्राजी के जीवन में एक नवीन मोड़ आया। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के आन्दोलन का इन पर गहरा प्रभाव पड़ा और उससे प्रेरित होकर ये राष्ट्र-प्रेम पर कविताएँ लिखने लगीं। इनके पिता ब्रिटिश राज्य के विरुद्ध राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेते रहे। सुभद्राजी ने असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के कारण अपना अध्ययन छोड़ दिया था और पति के साथ राजनीतिक आन्दोलनों में भाग लेती रहीं, जिसके परिणामस्वरूप ये कई बार जेल भी गयीं। ये मध्य प्रदेश विधानसभा की सदस्या भी रहीं। सन् 1948 ई0 में एक मोटर-दुर्घटना में सिवनी में इनकी असामयिक मृत्यु हो गयी।

कवयित्री-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म–**16 अगस्त, 1904 ई0
- **जन्म-स्थान–**निहालपुर (प्रयागराज)।
- **पिता–**रामनाथ सिंह।
- **पति–**लक्ष्मण सिंह चौहान।
- **मृत्यु–**15 फरवरी, 1948 ई0 (सिवनी)।
- **प्रमुख रस–**वीर एवं वात्सल्य।
- **भाषा–**शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली।
- **शैली–**संगीतात्मक, ओजयुक्त, व्यावहारिक।
- **छन्द–**तुकांत-मुक्तक।
- **प्रमुख रचनाएँ–**सीधे-सादे चित्र, बिखरे मोती, उन्मादिनी, मुकुल और त्रिधारा।

सुभद्राजी की काव्य-साधना के पीछे उत्कट देश-प्रेम, अपूर्व साहस तथा आत्मोत्सर्ग की प्रबल कामना है। इनकी कविता में सच्ची वीरांगना का ओज और शौर्य प्रकट हुआ है। हिन्दी काव्य जगत् में ये अकेली ऐसी कवयित्री थीं जिन्होंने अपने कण्ठ की पुकार से, लाखों भारतीय युवक-युवतियों को युग-युग की अकर्मण्य उदासी को त्याग, स्वतन्त्रता-संग्राम में अपने को झोंक देने के लिए प्रेरित किया। वर्षों तक सुभद्राजी की '**झाँसी वाली रानी थी**' और '**वीरों का कैसा हो वसन्त**' शीर्षक कविताएँ लाखों तरुण-तरुणियों के हृदय में क्रान्ति की ज्वाला फूँकती रहीं।

'**मुकुल**' और '**त्रिधारा**' इनके प्रसिद्ध काव्य-संग्रह हैं, '**सीधे-सादे चित्र**', '**बिखरे मोती**' और '**उन्मादिनी**' इनकी कहानियों के संकलन हैं।

सुभद्राजी की भाषा सीधी, सरल तथा स्पष्ट एवं आडम्बरहीन खड़ीबोली है। मुख्यतः दो रस इन्होंने चित्रित किये हैं—वीर तथा वात्सल्य। अपने काव्य में पारिवारिक जीवन के मोहक चित्र भी इन्होंने अंकित किये हैं जिनमें वात्सल्य की मधुर व्यंजना हुई है। इनके काव्य में एक ओर नारी-सुलभ ममता तथा सुकुमारता है और दूसरी ओर पद्मिनी के जौहर की भीषण ज्वाला। अलङ्कारों अथवा कल्पित प्रतीकों के मोह में न पड़ कर सीधी-सादी स्पष्ट अनुभूति को इन्होंने प्रधानता दी है। शैलीकार के रूप में सुभद्राजी की शैली में सरलता विशेष गुण है। नारी-हृदय की कोमलता और उसके मार्मिक भाव पक्षों को नितान्त स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत करना इनकी शैली का मुख्य आधार है।

झाँसी की रानी की समाधि पर

इस समाधि में छिपी हुई है,
एक राख की ढेरी।
जल कर जिसने स्वतन्त्रता की,
दिव्य आरती फेरी।।

यह समाधि, यह लघु समाधि है,
झाँसी की रानी की।
अंतिम लीलास्थली यही है,
लक्ष्मी मरदानी की।।

यहीं कहीं पर बिखर गये वह,
भग्न विजय-माला-सी।
उसके फूल यहाँ संचित हैं,
है यह स्मृति-शाला सी।।

सहे वार पर वार अंत तक,
लड़ी वीर बाला-सी।
आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर,
चमक उठी ज्वाला-सी।।

बढ़ जाता है मान वीर का,
रण में बलि होने से।
मूल्यवती होती सोने की,
भस्म यथा सोने से।।

रानी से भी अधिक हमें अब,
यह समाधि है प्यारी।
यहाँ निहित है स्वतन्त्रता की,
आशा की चिनगारी।।
इससे भी सुन्दर समाधियाँ,
हम जग में हैं पाते।

उनकी गाथा पर निशीथ में,
क्षुद्र जंतु ही गाते।।
पर कवियों की अमर गिरा में,
इसकी अमिट कहानी।
स्नेह और श्रद्धा से गाती
है, वीरों की बानी।।

बुंदेले हरबोलों के मुख,
हमने सुनी कहानी।
खूब लड़ी मर्दानी वह थी,
झाँसी वाली रानी।।

यह समाधि, यह चिर समाधि,
है, झाँसी की रानी की।
अंतिम लीलास्थली यही है,
लक्ष्मी मरदानी की।। **('त्रिधारा' से)**

|| अभ्यास प्रश्न ||

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—
(क) यहीं कहीं पर ..... ज्वाला-सी। **(2017AG, 19AC)**
(ख) बढ़ जाता है ..... आशा की चिनगारी। **(2016CE)**
(ग) बुंदेले हरबोलों ..... वाली रानी।
(घ) पर कवियों की ..... झाँसी वाली रानी।
(ङ) स्नेह और श्रद्धा से ..... झाँसी की रानी की।
(च) यहाँ निहित है ..... इसकी अमिट कहानी। **(2017AF)**

2. सुभद्राकुमारी चौहान का जीवन-परिचय एवं रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **(2016CA,CC,17AD,18HF, 19AA,AG,20MD,ME,MA)**

3. सुभद्राकुमारी चौहान के साहित्यिक अवदान एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

4. सुभद्राकुमारी चौहान की जीवनी तथा उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए और उसके काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

5. सुभद्राकुमारी चौहान की जीवनी लिखिए तथा उनके काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

6. सुभद्राकुमारी चौहान का जीवन-परिचय तथा उनकी काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

7. झाँसी की रानी के लिए कवयित्री ने किन विशेषणों का प्रयोग किया है और वे कहाँ तक सार्थक हैं?

8. झाँसी की रानी की समाधि को कवयित्री ने रानी से भी अधिक प्यारी बतलाया है। क्यों?

9. 'झाँसी की रानी की समाधि पर' शीर्षक कविता द्वारा कवयित्री ने क्या संदेश दिया है? स्पष्ट कीजिए।

10. 'झाँसी की रानी की समाधि पर' शीर्षक कविता का सारांश लिखिए।

11. वीर रस का लक्षण बताते हुए प्रस्तुत पाठ से एक उदाहरण दीजिए।

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

(i) झाँसी की रानी की वीरता पर एक निबन्ध लिखिए।

(ii) सुभद्रा कुमारी चौहान की रचनाओं का उल्लेख तालिका के माध्यम से कीजिए।

टिप्पणी

➨ झाँसी की रानी की समाधि पर

दिव्य = अलौकिक। **मरदानी** = पुरुषों के समान। **संचित** = एकत्र। **वार** = आघात, चोट। **मूल्यवती** = मूल्यवान। **निहित** = रखी हुई। **भग्न विजय-माला-सी** = टूटी हुई माला के फूलों की भाँति, झाँसी की रानी बलि हो गयी। उपमा अलङ्कार है। **फूल** = इसका एक अर्थ पुष्प और दूसरा अस्थियाँ हैं। अतः श्लेष अलङ्कार है। **आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर** = जिस प्रकार यज्ञ में पवित्र आहुतियाँ दी जाती हैं उसी प्रकार लक्ष्मीबाई ने स्वतन्त्रता के यज्ञ में स्वयं की बलि दे दी। उपमा अलङ्कार है। **क्षुद्र जंतु ही गाते** = झींगुर, छिपकली आदि तुच्छ जीव घूमा करते हैं। उपेक्षित होने का सूचक। **गिरा** = वाणी। **निशीथ** = रात्रि।

●●